Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL, MAR-APR, 2019, VOL- 6/50

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव का अध्ययन

प्रोफे. पी. एस. त्यागी[1] & अली रज़ा[2]

[1]प्रोफेसर, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा।

[2]शोधार्थी, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा।

Abstract

व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन समयानुसार एवं परिस्थितियों के परिणामस्वरूप होना एक स्वाभाविक घटना है, परन्तु इसकी गति सर्वथा सामान्य नहीं होती है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था सबसे महत्वपूर्ण अवस्था मानी जाती है जिसमें परिवर्तन की गति अति तीव्र होती है। इन परिस्थितियों के पीछे कई प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कारक अपनी भूमिका अनिवार्य रूप से निभाते हैं एवं परिवर्तन का प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक किसी भी प्रकार का हो सकता है। पारिवारिक वातावारण एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कारक माना जाता है जो व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन लाने में अत्यन्त सक्रिय भूमिका का निर्वहन करता है। जीवनकाल की क्रान्तिकारी परिवर्तनीय अवस्थाओं में से किशोरावस्था को महत्वपूर्ण मानते हुए माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पारिवारिक वातावरण के सन्दर्भ में संवेगात्मक परिपक्वता की स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से वर्णात्मक सर्वेक्षण अनुसन्धान किया गया। जिसमें कक्षा 9वीं के (N=200) विद्यार्थियों का चयन बहुस्तरीय न्यादर्श (सोद्देश्य एवं याद्रच्छिक) विधि से किया गयाद्य अध्ययन से सम्बन्धित चरों के सन्दर्भ में आँकड़े एकत्रित करने के उद्देश्य से चयनित प्रतिदर्श पर दो उपकरणों (फैमिली क्लाइमेट स्केल 1990 – डॉ. बीना शाह एवं इमोशनल मैच्योरिटी स्केल 1990– डॉ. यशवीर सिंह और डॉ. महेश भार्गव) को प्रशासित किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकी एवं प्राचलिक सांख्यिकी का उपयोग किया गयाद्य अध्ययन के निष्कर्ष में यह पाया गया है कि विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। इस शोध पत्र के अंत में शोध से सम्बन्धित परिणामों के सन्दर्भ में उनका शैक्षिक निहितार्थ, शोध की सीमाओं एवं भविष्य सम्बन्धी सुझाव बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

शिक्षा का लक्ष्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में विद्यालय एवं उसके समाज के साथ–साथ उसके पारिवारिक वातावरण का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। अगर प्राचीनकाल की बात की जाए तो जहाँ गुरुकुल नहीं होते थे वहाँ पर बालक के विकास की जिम्मेदारी माता–पिता की हुआ करती थी। वर्तमान समय में भी विद्यार्थी के पारिवारिक वातावरण का उनके जीवन के प्रत्येक पक्ष पर प्रभाव पड़ता है। विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उन पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार से प्रभाव पड़ सकता है। **नैप (1993)** – "पारिवारिक वातावरण आम तौर पर शारीरिक और भावात्मक दोनों, एवं परिवार की स्थिति को संदर्भित करता है चाहे वो अच्छा हो या बुरा।" अगर किशोर आयु वर्ग के विद्यार्थियों का अवलोकन किया जाए तो उनके संवेगों की परिपक्वता पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव प्रायः पड़ता ही है। परिवार के वातावरण का

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, संवेगात्मक परिपक्वता, जीवन सन्तुष्टि, शारीरिक विकास, अध्ययन आदतों एवं व्यवहार के साथ–साथ अन्य पक्षों यथा शैक्षिक व सामाजिक पक्षों पर भी प्रभाव पड़ता ही है।

विद्यार्थियों के जीवन में संवेगों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है तथा विद्यार्थियों के वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास में संवेगों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। लगातार संवेगात्मक अस्थिरता विद्यार्थियों की वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करती है तथा अनेक प्रकार की शारीरिक, मानसिक और सामाजिक समस्याओं को उत्पन्न करती है। वहीं दूसरी ओर संवेगात्मक रूप से परिपक्व, स्थिर विद्यार्थी खुशहाल एवं स्वस्थ रहता है और अपना जीवन शान्तिपूर्ण तरीके से व्यतीत करता है। **बेसेल (2004)** के अनुसार– "संवेगात्मक परिपक्वता उस व्यवहार पैटर्न को संदर्भित करती है, जो जीवन को अच्छे ढंग से समायोजन करने में सक्षम बनाती है।" साथ ही **मेनिंगर (1999)** ने कहा है कि "संवेगात्मक परिपक्वता एक व्यक्ति की वास्तविकता से रचनात्मक ढंग से निपटने की क्षमता है।" परिवार का वातावरण व उनके सदस्यों की संवेगात्मक स्थिरता एवं परिपक्वता विद्यार्थी की संवेगात्मक परिपक्वता को भी प्रभावित कर सकती है, क्योंकि विद्यार्थी अधिकतर समय अपने परिवार के सानिध्य में ही व्यतीत करते हैं। संवेगात्मक परिपक्वता से आशय है कि कोई विद्यार्थी परिस्थितियों के प्रति किस प्रकार से प्रतिक्रिया करता है या जवाब देता है, किस प्रकार अपनी भावनाओं को नियंत्रित करता है और दूसरों से सम्प्रेषण के दौरान किस प्रकार से व्यस्क के तरीके से व्यवहार करता है।

कुमार, ए० (2016) द्वारा एक विषय ''इम्पैक्ट ऑफ फैमिली क्लाइमेट, एकेडमिक मोटिवेशन एण्ड एडजस्टमेन्ट ऑन एकैडमिक अचीवमेन्ट ऑफ एडोलोसेन्ट्स'' पर शोध कार्य किया गया। निष्कर्ष में यह पाया गया कि परिवार का वातावरण विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। शैक्षिक अभिप्रेरणा विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाती है एवं शैक्षिक समायोजन भी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। **जाफरी, एस० (2011)** द्वारा ''इम्पैक्ट ऑफ फैमिली क्लाइमेट, मेन्टल हैल्थ, स्टडी हैबिट्स एण्ड सेल्फ कॉन्फिडेन्स ऑन द एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ सीनियर सेकेन्ड्री स्टूडेन्ट्स'' नामक एक विषय शोध कार्य किया गया। निष्कर्ष में यह पाया गया कि सभी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक वातावरण, मानसिक स्वास्थ्य, अध्ययन आदतों एवं आत्म विश्वास का सार्थक प्रभाव पड़ता है। **भूषण, एल, (2012)** द्वारा एक विषय ''ए कॉम्पेरेटिव स्टडी ऑफ फैमिली क्लाइमेट, स्कूल एडजस्टमेन्ट, एटीट्यूड टूर्वाड्स एजुकेशन एण्ड एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ जनरल, एस०सी० एण्ड बी०सी० स्टूडेन्ट्स इन हरियाणा'' पर शोध कार्य किया गया। निष्कर्ष के रूप में यह पाया गया कि– 1.एस०सी० एवं बी०सी० विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि में निम्न सकारात्मक सार्थक सहसम्बन्ध है। 2. सामान्य, एस०सी० एवं

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

बी०सी० विद्यार्थियों के स्कूल समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में सामान्य सकारात्मक सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया। **क्लैसेल्वन, एस० एण्ड महेश्वरी, के० (2016)** द्वारा ''ए स्टडी ऑन इमोशनल मैच्योरिटी अमंग द पोस्ट ग्रेजूएट स्टूडेन्टस्'' नामक शोध कार्य किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष में यह पता चला कि 45. 5 प्रति ात प्रतिभागियों की संवेगात्मक परिपक्वता मध्यम स्तर की है। **पाडंया, एम०एम० एण्ड जोगसन, वाई०ए० (2015)** द्वारा ''इमोशनल मैच्योरिटी एण्ड सोशल सपोर्ट अमंग गवर्नमेंट एण्ड प्राइवेट सेक्टर एम्प्लोईज'' विषय पर शोध कार्य किया गया। निष्कर्ष में यह पाया गया कि सरकारी एवं निजी कर्मचारियों की संवेगात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक समर्थन में सार्थक अन्तर नहीं है। **चोथानी, के० एण्ड वलन्द, पी०वी० (2014)** द्वारा ''इमोशलन मैच्योरिटी अमंग नार्मल एण्ड स्पेशल स्कूल टीचर'' विषय पर शोध कार्य किया गया। निष्कर्ष में पाया कि सामान्य स्कूल एवं विशेष स्कूल के शिक्षकों में संवेगात्मक परिपक्वता के कुछ घटकों (संवेगात्मक अस्थिरता, संवेगात्मक प्रतिगमन, सामाजिक समायोजन एवं व्यक्तित्व विघटन) में सार्थक अन्तर पाया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शोध अभिकल्प

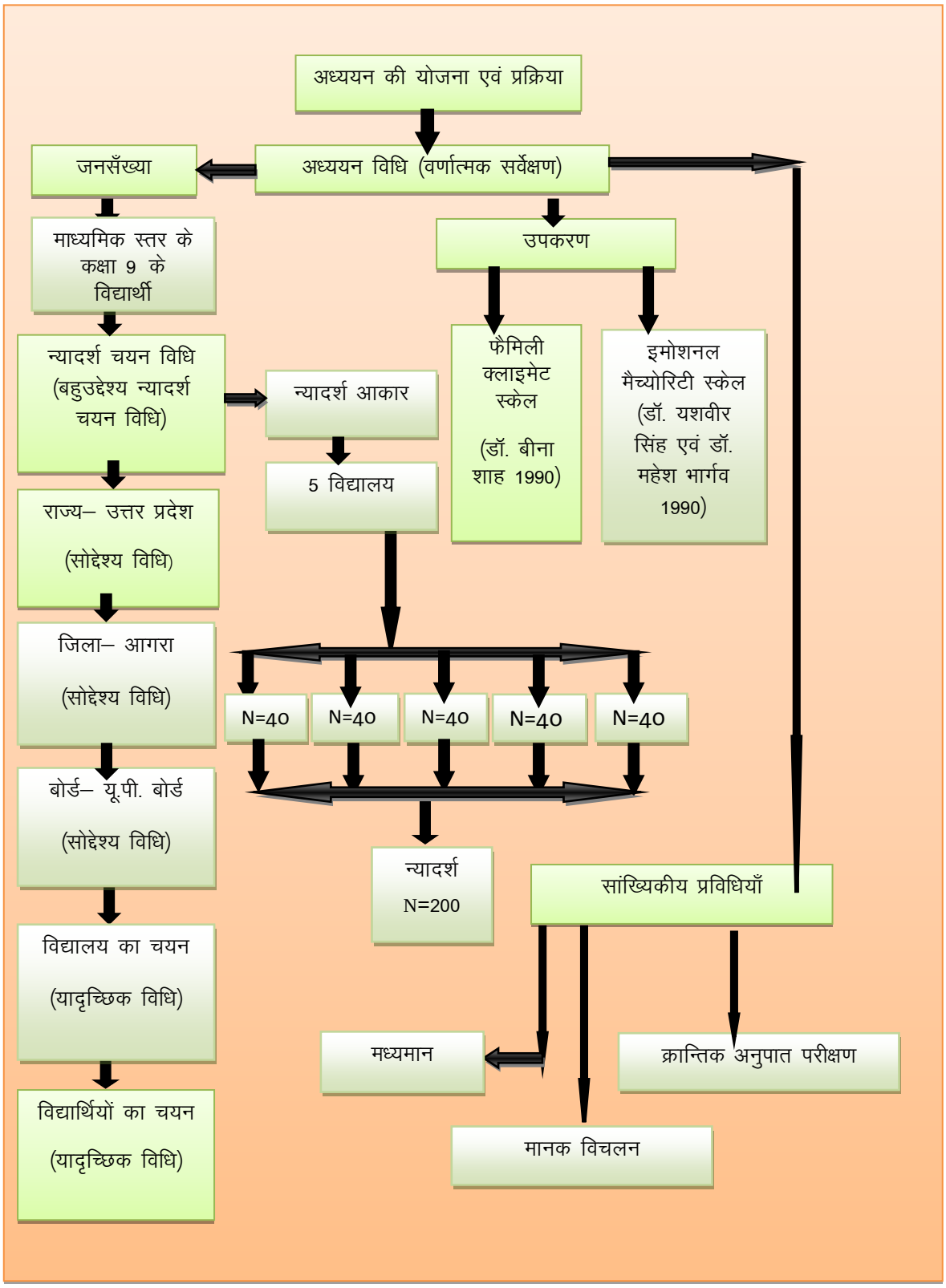

चित्र : शोध अभिकल्प

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अध्ययन में प्रयुक्त शोध विधि – प्रस्तुत शोध अध्ययन में उद्देश्य की प्राप्ति हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

जनसंख्या– प्रस्तुत शोध की जनसंख्या के रूप में माध्यमिक स्तर के कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों को चयनित किया गया है।

न्यादर्श व न्यादर्श चयन विधि– कक्षा 9वीं के उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के 200 विद्यार्थियों का चयन बहुस्तरीय न्यादर्श विधि से किया गया है, जिसमें से राज्य, जिला व बोर्ड का चयन सोद्देश्य विधि द्वारा तथा 5 विद्यालयों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि द्वारा चयनित किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण– शोधार्थी द्वारा अपने अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति तथा पारिवारिक वातावरण के प्रदत्तों के संकलन हेतु फैमिली क्लाइमेट स्केल **डॉ. बीना शाह** (1990) उपकरण का चयन किया, जिसकी विश्वसनीयता गुणांक= 0.76 थी और वैधता गुणांक= .80 थी। साथ ही संवेगात्मक परिपक्वता से सम्बंधित प्रदत्तों के संकलन हेतु **डॉ. यशवीर सिंह** एवं **डॉ. महेश भार्गव** द्वारा निर्मित 'इमोशनल मैच्योरिटी स्केल (1990) उपकरण का चयन किया गया है, जिसकी विश्वसनीयता गुणांक= 0.75 थी और वैधता गुणांक= .64 थी।

सांख्यिकी प्रविधियाँ–अध्ययन से संकलित किये गए आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए सर्वप्रथम वर्णात्मक सांख्यिकी मध्यमान, मानक विचलन का उपयोग किया गया। इसके पश्चात् आँकडों की प्रकृति के सामान्य रूप से वितरित होता हुआ देखकर प्राचलिक सांख्यिकी क्रांतिक अनुपात द्वारा दो समूहों की तुलना करने का निर्णय लिया गयज्ञं

प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन

अध्ययन के इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु एवं प्रदत्तों को सार्थक रूप प्रदान करने के लिए विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण के प्राप्तांकों का मध्यमान तथा मानक विचलन ज्ञात किया गया जिसका प्रस्तुतीकरण नीचे दी गयी तालिका में किया गया है।

तालिका संख्या :1– विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण के प्राप्ताकों का मध्यमान,मानक विचलन

पारिवारिक वातावरण	कुल विद्यार्थी N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)
	200	91.77	7.75

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उपरोक्त में वर्णित आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि विद्यार्थयों के पारिवारिक वातावरण के प्राप्तांकों का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 91.77 व 7.75 है।

द्रश्यात्मक प्रस्तुतीकरण : विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण के प्राप्ताकों का मध्यमान तथा मानक विचलन।

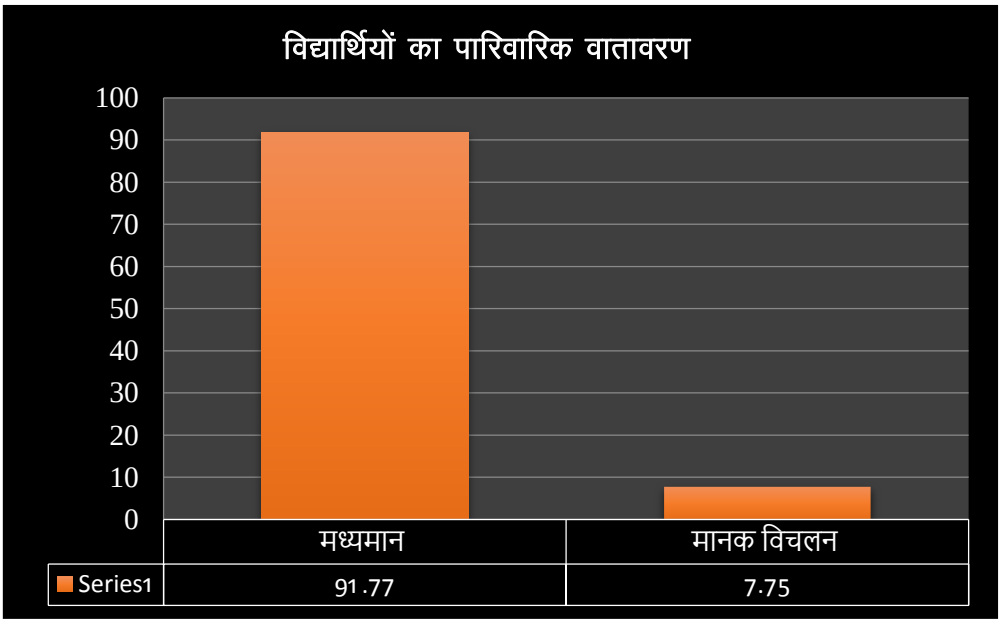

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन

अध्ययन के इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु फलांकित प्रदत्तों को सार्थक रूप प्रदान करने के लिए यू. पी बोर्ड के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों का मध्यमान तथा मानक विचलन ज्ञात किया गया है, जिसका प्रस्तुतीकरण नीचे दी गयी तालिका में किया गया ळें

तालिका संख्या :2– विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्ताकों का मध्यमान तथा मानक विचलन।

	कुल विद्यार्थी N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)
संवेगात्मक परिपक्वता	200	128.93	24.96

उपरोक्त तालिका में वर्णित आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्ताकों का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 128.93 व 24.96 है।

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

द्रश्यात्मक प्रस्तुतीकरण : विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्ताकों का मध्यमान तथा मानक विचलन।

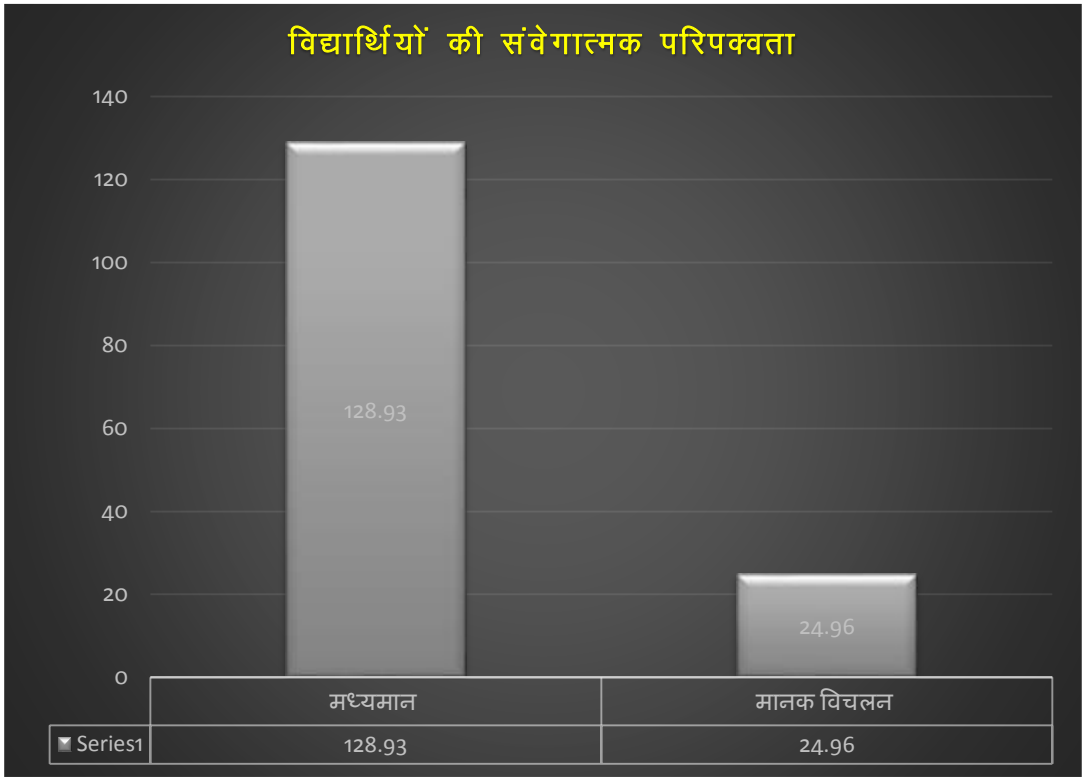

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव का अध्ययन

अध्ययन के इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु फलांकित प्रदत्तों को सार्थक रूप प्रदान करने के लिए विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्ताकों का मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात ज्ञात किया गया है, जिसका प्रस्तुतीकरण नीचे दी गयी तालिका में किया गया है।

तालिका संख्या :3– माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियो के पारिवारिक वातावरण एवं संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात।

विवरण	N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रान्तिक अनुपात (C.R)	सार्थकता स्तर
विद्यार्थियो का पारिवारिक वातावरण	200	91.77	7.75	3.803	.01
विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता	200	128.93	24.96		

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियो के पारिवारिक वातावरण एवं संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान विद्यार्थियो के पारिवारिक वातावरण एवं संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान क्रमशः 91.77 व 128.96 है, और मानक विचलन क्रमशः 7.75 व 24.96 है। क्रान्तिक अनुपात का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का संवेगात्मक परिपक्वता पर सार्थक प्रभाव पाया गया क्योंकि गणना द्वारा प्राप्त क्रान्तिक अनुपात (3.803) .01 स्तर पर प्रदत्त सारणी मूल्य में अधिक है। अतः हमारी शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है' अस्वीकृत की जाती है। इस शून्य परिकल्पना की अस्वीकृति का अभिप्राय इस बात से है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

द्रश्यात्मक प्रस्तुतीकरण : माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियो के पारिवारिक वातावरण एवं संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान, मानक विचलन।

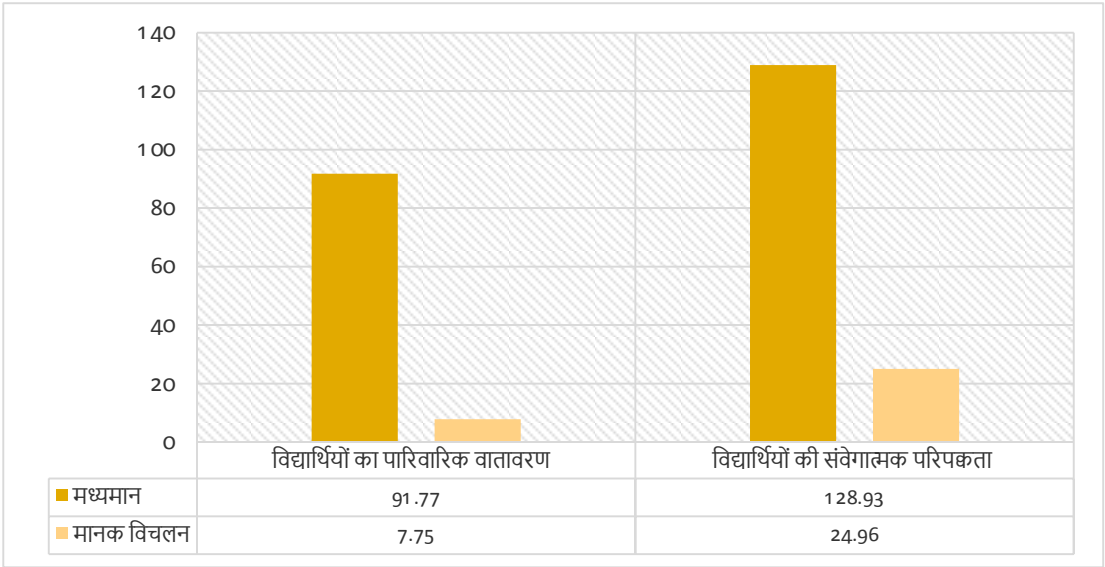

शोध अध्ययन द्वारा प्राप्त निष्कर्ष एवं शैक्षिक निहितार्थ

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता पर सार्थक प्रभाव पाया गया। प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम इस बिंदु को इंगित करते हैं कि विद्यार्थी को एक अच्छा पारिवारिक वातावरण प्रदान करके उनकी संवेगात्मक परिपक्वता को सुद्रढ व विकसित किया जा सकता है, जिससे विद्यार्थी को समाज में परिस्थितियों के अनुसार कार्य करने में सहायता प्राप्त होती है। विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता को विकसित करके उनकी भावनाओं और अन्तरराात्मा को नियंत्रित किया जा सकता है। अध्ययन के निष्कर्ष को माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के परिवारों से अवगत कराया जा सकता है और एक अच्छा पारिवारिक वातावरण प्रदान करने के लिए

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रोत्साहित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त पारिवारिक वातावरण के महत्त्व को माध्यमिक स्तर के विद्यार्थिओं के पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण अंग समझकर गृह–विज्ञान व सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम में एक पाठ विषय बनाकर इन्हें विद्यार्थियों तक भी पहुँचाना चाहिए।

शोध अध्ययन की सीमाएँ एवं भावी अध्ययन हेतु सुझाव

प्रस्तुत शोध कार्य को आगरा शहर के विद्यार्थियों तक ही सीमित रखा गया। जनसँख्या में कक्षा 9 के विद्यार्थियों को ही चयनित किया गया और न्यादर्श की संख्या को भी काफी सीमित (N=200) रखा गया था। अध्ययन को अधिक विश्वसनीय बनाने एवं निष्कर्षों को व्यापक जनसँख्या पर सामान्यीकृत करने हेतु न्यादर्श आकार विस्तृत करके शोध को पुनः प्रशासित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त न्यादर्श चयन विधि को और भी सशक्त बनाकर अध्ययन को प्रशासित किया जा सकता है। अध्ययन की प्रकृति प्रयोगात्मक बनाकर भी इसके निष्कर्षों को और अधिक विश्वसनीय बनाया जा सकता है। विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता पर पारिवारिक वातावरण के अतिरिक्त अन्य बहु चरों (यथा– आयु, बुद्धि–लब्धि, व्यक्तित्व, अभिवृत्ति, साथी समूह आदि) को लेकर भी भविष्य में अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

कुमार ए. (2016). इम्पैक्ट ऑफ फैमिली क्लाइमेट, एकेडमिक मोटिवेशन एण्ड एडजस्टमेन्ट ऑन एकैडमिक अचीवमेन्ट ऑफ एडोलोसेन्टस, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़।

क्लैसेल्वन, एस० एण्ड महेश्वरी, के० (2016), "ए स्टडी ऑन इमोशनल मैच्योरिटी अमंग द पोस्ट ग्रेजूएट स्टूडेन्टस", जर्नल ऑफ हयूमनिटिज एण्ड सोशल साइन्स, आइ.ओ.एस.आर वाल्यूम 21, पृ 32–34।

चोथानी, के० एण्ड वलन्द, पी०वी० (2014), "इमोशलन मैच्योरिटी अमंग नार्मल एण्ड स्पेशल स्कूल टीचर", क्रिएटिव स्पेस, इंटरनै ानल जर्नल, वॉल्यूम 2, इशु 3–4, पृ 20–28।

जाफरी, एस० (2011), "इम्पैक्ट ऑफ फैमिली क्लाइमेट, मेन्टल हैल्थ, स्टडी हैबिट्स एण्ड सेल्फ कॉन्फिडेन्स ऑन द एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ सीनियर सेकेन्ड्री स्टूडेन्ट्स", बुन्देलखंड यूनिवर्सिटी, झांसी।

शाह बी0 (1990), फैमिली क्लाइमेट स्केल, नैशनल साइकोलॉजिकल कार्पोरेशन, आगरा।

सिंह वाई0 एण्ड भार्गव एम0 (1990), इमोशनल मैच्योरिटी स्केल, नेशनल साइकोलॉजिकल कार्पोरेशन, आगरा।

भूषण एल. (2013). ए कॉम्पेरेटिव स्टडी ऑफ फैमिली क्लाइमेट, स्कूल एडमस्टमेन्ट, एटीट्यूड टूवार्ड्स एजूकेशन एण्ड एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ जनरल एस.सी. एण्ड ओ.बी.सी. स्टूडेन्ट्स इन हरियाणा, महर्शि दयानन्द यूनिवर्सिटी, रोहतक।

पाडंया, एम०एम० एण्ड जोगसन, वाई०ए० (2015), "इमोशनल मैच्योरिटी एण्ड सोशल सपोर्ट अमंग गवर्नमेंट एण्ड प्राइवेट सेक्टर एम्प्लोईज", क्रिएटिव स्पेस, इंटरनैशनल जर्नल, वॉल्यूम 2, इशु 1, पृ 57–69।

नैप, डी. सारा. (1993). द कोंटेमपरी थेसोर्स ऑफ सोशल साइंस टर्म्स एण्ड सय्नोनेम्स. द ओरिक्स प्रेस।

बेसेल, आर. (2004). लव इज नॉट ए गेमः बट यू शुड एण्ड नो ओड्स, कैलिफोर्नियाः पर्सनहुड प्रेस।

मेनिंगर, सीवी. (1999). इमोशनल मैचुअरिटी. न्यू यॉर्कः हिकमैन एसोसिएट्स।

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies